अनुसंधान में स्थानीकरण बनाम वैश्वीकरण

डॉ. पूजा दुबे, सहायक प्राध्यापक
संत हरकेवल शिक्षा महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.)
ईमेल आईडी – poojadubey22289@gmail.com

सारांश

अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें निरंतर खोज जारी रहती है। कोई समस्या यदि वैश्विक स्तर पर है, तो वह कभी न कभी स्थानीय स्तर पर भी दिखाई देती है। वातावरण और समयानुसार परिस्थितियों के अनुरूप समस्या के स्वरूप में परिवर्तन होता है, परंतु समस्या सार्वभौमिक होती है। शोधकर्ता निरंतर शोध प्रक्रिया में संलग्न रहता है। वैश्विक स्तर पर किया गया कोई भी शोध स्थानीय स्तर पर कितना प्रासंगिक एवं व्यावहारिक है, यह वहाँ की परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

यदि हम किसी विशिष्ट विषय पर शोध कर रहे हैं, तो स्थानीकरण के अंतर्गत स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हैं। स्थानीयकरण के द्वारा विश्वसनीयता एवं व्यावहारिकता बनी रहती है। वैश्वीकरण में शोधकर्ता वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु अग्रसर होता है, जिसमें स्थानीय संसाधनों तथा दुर्लभ संसाधनों की बचत होती है। वैश्वीकरण वैश्विक एवं स्थानीय सीमाओं को दूर कर नए विचारों की उत्पत्ति हेतु प्रोत्साहित करता है।

वैश्वीकरण का अनुसंधान पर बहुआयामी प्रभाव दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान में वैश्वीकरण एवं स्थानीयकरण दोनों के माध्यम से विश्व के उत्थान की बात सामने आई है। अनुसंधान एक ऐसा माध्यम है, जिससे शोधकर्ता अपने मानस पटल पर आई समस्याओं का क्रमबद्ध, चरणबद्ध एवं योजनाबद्ध तरीके से समाधान करता है। इससे शिक्षा जगत में एक नई विचारधारा सम्मिलित होती है, जिसका लाभ वैश्विक स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक प्राप्त होता है।

शब्द कुंजी : अनुसंधान, स्थानीकरण, वैश्वीकरण, बहुआयामी, चरणबद्ध।

प्रस्तावना

अनुसंधान में **स्थानीकरण एवं वैश्वीकरण** एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह कार्य करते हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। यदि कोई अनुसंधान वैश्विक स्तर पर किया गया हो, किंतु स्थानीय स्तर पर उसका अनुपालन या उपयोग न किया जाए, तो हम उस अनुसंधान के वास्तविक लाभ से वंचित रह जाते हैं। ऐसी स्थिति में हम वर्तमान की अपेक्षा अतीत में ही जी रहे होते हैं तथा अपने समय एवं संसाधनों का उचित उपयोग नहीं कर पाते।

उदाहरण स्वरूप, विश्व का पहला सेल्युलर मोबाइल फोन 3 अप्रैल 1973 को निर्मित हुआ था। यदि आज हम उसी प्रकार का मोबाइल फोन बनाने का प्रयास करें, तो यह न तो सृजनात्मकता कहलाएगा और न ही नवीन अनुसंधान की श्रेणी में आएगा। उस आविष्कार के बाद निरंतर अनुसंधान और नवाचार के परिणामस्वरूप आज आई-फोन 17 प्रो मैक्स जैसे उन्नत उपकरण हमारे सामने हैं। यह क्रमिक अनुसंधान एवं विकास का ही परिणाम है। यही स्थिति अन्य सभी क्षेत्रों में भी देखने को मिलती है। हम वैश्विक स्तर पर समस्याओं को समझकर स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप स्थायी समाधान विकसित कर सकते हैं। क्योंकि किसी भी निर्णय अथवा नवाचार में स्थानीय सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज तथा सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

अनुसंधान

अनुसंधान शब्द को अंग्रेजी भाषा में **Research** कहा जाता है। Research शब्द दो भागों से मिलकर बना है— *Re* तथा *Search*। इसमें *Re* का अर्थ है "बार-बार" और *Search* का अर्थ है "खोज करना"। इस प्रकार अनुसंधान का शाब्दिक अर्थ किसी विषय की गहन एवं पुनरावृत्त खोज करना है।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान का विशेष महत्व है। शैक्षिक अनुसंधान के अंतर्गत शिक्षण संबंधी समस्याओं तथा बालकों के व्यवहार एवं विकास से जुड़ी समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। समय-समय पर अनेक विद्वानों ने अनुसंधान की परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं—

जॉन वेस्ट के अनुसार- "अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित प्रक्रिया है, जो नई खोज करती है तथा संकलित एवं सुव्यवस्थित ज्ञान का विकास करती है।"

पीकुक के अनुसार .एम .- "किसी समस्या के संदर्भ में ईमानदारी, विस्तार एवं बुद्धिमत्ता के साथ तथ्यों, उनके अर्थ तथा उपयोगिता की खोज ही अनुसंधान है।"

एलरेडमैन के अनुसार .बी .- "अनुसंधान नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया गया एक व्यवस्थित प्रयास है।"

स्थानीकरण)Localization)

जब कोई व्यक्ति अपनी स्थानीय संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज, भाषा तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार किसी विषय, उत्पाद या विचार में परिवर्तन करता है अथवा उसे अपने अनुकूल बनाता है, तो उसे **स्थानीकरण** कहा जाता है।

उदाहरण: गूगल द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद की सुविधा प्रदान करना स्थानीकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

वैश्वीकरण)Globalization)

आज छोटे से छोटा गाँव भी विश्व से जुड़ा हुआ है। यह सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के विकास के कारण संभव हो पाया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने आर्थिक स्वतंत्रता, ज्ञान, संपत्ति तथा उत्पादन प्रक्रियाओं में तीव्र परिवर्तन लाए हैं। इन्हीं परिवर्तनों के कारण विश्व को **"वैश्विक ग्राम" (Global Village)** की संज्ञा दी गई है।

विश्व के कल्याण हेतु वैश्विक स्तर पर अनुसंधान को आवश्यक माना जाता है, जिससे विभिन्न देशों एवं समाजों की समस्याओं के समाधान खोजे जा सकें। शिक्षा के क्षेत्र में वैश्वीकरण के माध्यम से अधिक उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण जीवन उपलब्ध कराया जा सकता है। वैश्विक ज्ञान, तकनीक और अनुभवों के आदान-प्रदान से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है तथा समाज के समग्र विकास को गति मिलती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. वैश्विक स्तर पर हुए शोधों का स्थानीय स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. स्थानीय शिक्षा व्यवस्था पर वैश्विक शिक्षा के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. वैश्विक संस्कृति का स्थानीय जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता

अनुसंधान के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों का स्थानीयकरण पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान डिजिटल युग में प्रतिदिन नए परिवर्तन हो रहे हैं, जिसके कारण स्वयं को निरंतर अद्यतन (Update) रखना समय की आवश्यकता बन गया है। इसलिए वैश्विक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों, शोध कार्यों एवं नवाचारों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। साथ ही यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि इन वैश्विक उपलब्धियों का स्थानीय स्तर पर किस प्रकार प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है कि प्रत्येक शोधार्थी अपने विचारों को व्यापक दृष्टिकोण के साथ विकसित कर सके तथा उन्हें सरल एवं सहज रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत कर सके। इससे वैश्विक ज्ञान एवं स्थानीय आवश्यकताओं के मध्य समन्वय स्थापित करने में सहायता प्राप्त होगी।

अनुसंधान पद्धति

1. **प्रकार :** वर्णनात्मक एवं अवलोकन आधारित।
2. **दृष्टिकोण :** मिश्रित (गुणात्मक एवं मात्रात्मक)।
3. **तकनीक :** अवलोकन, समीक्षा एवं विश्लेषण।

भविष्य में उपयोगिता

1. आधुनिक शिक्षा में अनुसंधान की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता के विस्तार हेतु।
2. अनुसंधान एवं नवाचार में विश्वसनीयता बनाए रखने हेतु।
3. अनुसंधान में स्थानीकरण एवं वैश्वीकरण की सार्वभौमिकता की पहचान हेतु।
4. समस्त शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होने तथा शोध कार्य करने से व्यक्तिगत विकास में सहायता हेतु।
5. सतत विकास लक्ष्यों)SDGs) की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करने हेतु।

निष्कर्ष

अनुसंधान में वैश्वीकरण और स्थानीकरण के मध्य संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। वैश्विक स्तर पर हम नई तकनीकों, सिद्धांतों तथा नवाचारों को अपनाते हैं, जबकि स्थानीय स्तर पर अनुसंधान करते समय स्थानीय संस्कृति, सभ्यता, आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हैं। वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर उपलब्ध डेटा, सिद्धांतों तथा आधुनिक तकनीकों का उपयोग अनुसंधान में सरलता से किया जा रहा है, किंतु उनका वास्तविक लाभ तभी संभव है जब प्राप्त ज्ञान एवं निष्कर्षों का स्थानीय स्तर पर सफलतापूर्वक उपयोग किया जाए।

किसी भी अनुसंधान का अंतिम उद्देश्य विकास एवं जनकल्याण होता है। वैश्वीकरण की व्यापक विचारधारा को स्थानीय संस्कृति एवं सभ्यता के साथ समन्वित करके प्रयोग में लाना अनुसंधान को अधिक समावेशी, प्रासंगिक एवं प्रभावी बनाता है। अतः अनुसंधान में **"वैश्वीकरण बनाम स्थानीकरण"** का मूल आशय यही है कि वैश्विक स्तर की सोच, ज्ञान एवं नवाचारों को स्थानीय स्तर पर सार्थक रूप से लागू किया जाए, जिससे समाज, शिक्षा एवं मानव जीवन के समग्र विकास को गति मिल सके।

संदर्भित ग्रंथ

1. **शर्मा, ओएवं गुप्ता .पी ., शोभा** (2007–2008). *उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा*। पृष्ठ संख्या 148–153।
2. **कुलश्रेष्ठ, एस. पी.** (2020). *शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार*। नई दिल्ली राष्ट्रीय प्रकाशन। :
3. **University of California San Diego.** (2020, September 30). *Research and Global Perspectives*. प्राप्त किया गया: https://gpnews.ucsd.edu